

परमेश्वर से सीधा संबंध



मसीह यीशु स्वर्गीय पिता
तक जाने का मार्ग है ।

यीशु के लहू के द्वारा तुम्हें परमेश्वर के सिंहासन तक, स्वर्गीय पिता तक तुरंत और निरंतर सीधा प्रवेश प्राप्त है!

यह अर्थ है कि तुम हर चीज़ के साथ, हर समस्या के साथ, हर चिन्ता के साथ, किसी भी समय और तुरंत कृपा के सिंहासन पर, परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकते हो — यीशु के लहू द्वारा बुरे विवेक से शुद्ध होकर ।

मसीह (क्राइस्ट) में बने रहो — तब तुम इस सच्चाई को अनुभव करते हो ।

परभु यीशु में कैसे बने रह सकते हो?

बहुत सरल: अपनी ही धार्मिकता या भलाई पर भरोसा मत करो । अपने आपको और अपनी आत्मिक जीवन को अस्वीकार करो, जानबूझकर पवित्र आत्मा के अधीन हो जाओ और बच्चे की तरह विश्वास करो ।

अपने हृदय में तुम पूर्ण रूप से विश्वास कर चुके हो कि यीशु के लहू के द्वारा अब और किसी भी समय तुम परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की उपस्थिति और संगति में प्रवेश कर सकते हो — और वहाँ रह सकते हो — सभी पृथ्वी, प्राकृतिक, आत्मिक, शारीरिक और भौतिक समस्याओं, कठिनाइयों या इच्छाओं से बहुत ऊपर ।

जब यीशु करूस पर मरा, तो मन्दिर में पवित्र से पवित्र स्थान का पर्दा फट गया ।

यीशु के तीसरे दिन मरे हुआओं में से जी उठने के द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें मसीह (कराइस्ट) में नया जन्म दिया ।

जब तुम यीशु पर विश्वास करते हो, पूरे हृदय से मानते हो और परमेश्वर पिता की ओर मुड़ते हो, तब तुम परमेश्वर से नये सिरे से जन्म लेते हो और ईश्वरीय जीवन का बीज तुम्हारी आत्मा में आ जाता है । तुम अब मसीह में एक नया, ईश्वरीय मनुष्य हो ।

तुम अब सचमुच परमेश्वर की सन्तान हो, परमेश्वर से नये सिरे से जन्मे हो, और परमेश्वर पिता तथा पुत्र तक तुम्हारा सीधा प्रवेश है । पवित्र आत्मा — और उनके साथ पिता और पुत्र — तुममें निवास करते हैं । (यूहन्ना 14) ।

यह तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि इस सच्चाई को अपने हृदय में बढ़ने और फलने-फूलने दो, जब तक तुम्हारा हृदय पूरी तरह से इस पर विश्वास न कर ले ।

तुम वही जीते और अनुभव करते हो जिस पर तुम्हारा हृदय विश्वास करता है ।

नया नियम किसी भी डिब्बे को नहीं जानता ।

तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है । अब पत्थर के मन्दिर नहीं बचे और न तुम और परमेश्वर के बीच कोई याजक बचा है ।

तुम, तुम अब परमेश्वर के लिए याजक हो, ठीक वैसे ही जैसे अन्य सभी विश्वासी ।

पुरोहित वर्ग की व्यवस्था उस चीज़ को बिगाड़ती है जो यीशु का सुसमाचार सभी मनुष्यों के लिए लाया है । बहुत से मसीही — धर्म और परम्परा के द्वारा — सुसमाचार की इस केन्द्रीय सच्चाई को „चर्च“ नामक डिब्बे में बंद कर देते हैं, या जो भी नाम ईसाई „सम्प्रदाय“ खुद को देते हों ।

अगर तुम ऐसी चर्च या सम्प्रदाय के साथ अपनी पहचान जोड़ते हो, तो तुम अपने लिए वह विभाजन खड़ा कर लेते हो जिसे यीशु ने क्रूस पर फाड़ दिया था ।

मसीह (क्राइस्ट) की सभा (परिषद्) उसके शरीर के रूप में पृथ्वी पर कोई मानवीय संगठन या चर्च नहीं है, बल्कि उन विश्वासियों की सभा है जो जानते हैं कि वे परमेश्वर से जन्मे हैं और पिता के साथ सीधे संबंध में जीते हैं । वे परमेश्वर की उपस्थिति में इकट्ठा होते हैं ताकि परमेश्वर से सीधा संवाद करें, अपनी जगह पर पृथ्वी पर ईश्वरीय परिषद् के रूप में काम करें — परमेश्वर की इच्छा को पुकारें — और एक दूसरे की मदद करें, सहारा दें और प्रेरणा दें ।

सम्भावना को बर्बाद करना

मसीह (क्राइस्ट), अभिषिक्त, हममें पवित्र आत्मा के रूप में, अभिषेक के रूप में रहता है।

अगर कोई शाम को तुम्हें 10 मिलियन का जीत प्रमाण-पत्र दे दे, तो तुम मुश्किल से सो पाओगे। तुम कल सुबह इसे कैसे भुनाओगे, यह कल्पना करोगे और अपने हृदय में अपनी कल्पना शक्ति से बहुत सारी तस्वीरें बनाओगे कि तुम उस पैसे से क्या-क्या कर सकोगे और निश्चित रूप से करोगे।

लेकिन कल्पना करो: तुमने 10 मिलियन डॉलर का छोटा-मोटा अमाउंट नहीं पाया,

बल्कि ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्ता तुममें आ गया पवित्र आत्मा के रूप में!

मसीह हममें, महिमा की आशा (कल्पना)। (कुलुस्सियों 1:27)

तुम इस सबसे बड़े कल्पनीय उपहार के सामने कैसे शान्ति से सो सकते हो?

हमें दिन-रात भीतर से उत्तेजित होना चाहिए और जीवन्त रूप से कल्पना करनी चाहिए — यीशु के प्रति जलते हृदय के साथ — कि हम परमेश्वर के साथ जो हमारे भीतर है, क्या-क्या करेंगे। हमें अपने जीवन की चर्चा राजा, पिता और पुत्र के साथ गर्मागर्म बातचीत में करनी चाहिए और अपना राजसी विरासत ले लेनी चाहिए। हमें कल्पना करनी चाहिए कि हम अब महिमा और राजसी स्वर्गीय

शान-शौकत में कैसे जी रहे हैं और अपने जीवन को इस राजसी स्वर्गीय स्तर के अनुरूप बना रहे हैं।

यह बड़ी त्रासदी है कि अधिकांश लोग और मसीही इस विशाल सम्भावना को इस प्रकार हल्के में गँवा देते हैं। वे पृथ्वी के सुखों के पीछे भागते हैं और उन्हें थोड़ी भी परवाह नहीं कि वे परमेश्वर के अत्यन्त निकट हो सकते हैं और उसी निकटता में रह सकते हैं। परमेश्वर में, जहाँ मसीह तुममें निवास करता है, और पवित्र आत्मा के बिना जीवन के बीच बहुत बड़ा अन्तर होना चाहिए।

अब तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं बचा कि किसी भी लत में बने रहो या उसमें फँसे रहो, क्योंकि हृदय के एक ही क्षण में — यीशु के लहू से धुलकर — तुम स्वर्गीय पिता और यीशु की उपस्थिति में हो।

अब से तुम्हें क्या अधिक पिरय है: परमेश्वर, या अल्पकालिक पृथ्वी, शारीरिक, सांसारिक इन्द्रिय सुख और घमण्डी आत्मिक जीवन? क्या तुम आँखों की लालसा के सामने झुकोगे या पिता के प्रति प्रेम के सामने? (1 यूहन्ना 2:15-17)।

यदि तुम इस पवित्र और निर्णायक क्षण में परमेश्वर को चुनते हो — तो अच्छा।

तैयार हो जाओ और सजग रहो, क्योंकि तुम्हारा पुराना हृदय, जो पाप से प्रेम करता था और पापी आदतों तथा विचारों से भरा था, तुम्हें यह सोचकर बिगाड़ने की कोशिश करेगा कि तुम परमेश्वर को सिंहासन पर प्रथम स्थान न दो। निरन्तर मन फिराओ। स्वीकार करो और जानो कि वह पुराना मनुष्य मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया और मर गया।

यदि तुम मसीह में हो और उसमें बने रहते हो, और वह तुममें — यही सच्चाई है। तुम्हारी आत्मा में ईश्वरीय, पापरहित, महिमामय जीवन बढ़ रहा है। तुम परमेश्वर के लिए राजा और याजक बन रहे हो।

इस संक्रमण काल में तुम्हें अपने नए हृदय को ईश्वरीय सत्य, परमेश्वर के वचन, बाइबल से पुनः प्रोग्राम करना होगा, पुराने मनुष्य को उसकी आदतों समेत उतारना होगा और नए मनुष्य को पहनना होगा जो यीशु के समान है।

अपने हृदय को पुनः प्रोग्राम करो: अपनी जीवन की हर बात के लिए — जो कुछ तुम्हारे पास है, जो तुम करते हो या जिससे तुम मिलते हो — जीवन्त और स्पष्ट रूप से कल्पना करो कि तुम अब इसे राजा के पुत्र और पुत्री की महिमा और प्रतिष्ठा में कैसे जीते और करते हो। अपने स्वर्गीय पिता पर गर्व करो — वह संसार का राजा है। हर बात उसके साथ चर्चा करो। रात-दिन इस सच्चाई पर ध्यान लगाओ।

यह यीशु के सुसमाचार का सार है। परमेश्वर के वचन से भरपूर हो जाओ। AENT Study Bible पढ़ो और सुनो। (Jesus4you.ch पर निःशुल्क डाउनलोड)।

यदि कोई बात तुम्हें विश्वास करने में कठिन लगे क्योंकि वह अत्यन्त महिमामय, अत्यन्त अच्छी लगती है कि सच्ची हो सके, तो कई दिनों तक भाषाओं में बोलो और प्रार्थना करो, जब तक तुम्हें स्पष्ट न हो जाए, जब तक तुम जान न लो कि यह परमेश्वर की इच्छा है, और जब तक यह तुम्हारे जीवन में प्रकट न हो जाए।

**जिस बात पर तुम्हारा हृदय विश्वास करता है —
उसी को तुम जीते और अनुभव करते हो।**

यूहन्ना 4:19-26

१९ उस स्त्री ने उससे कहा, “हे परभु, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं।

२० हमारे बाप-दादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और आप लोग कहते हैं कि आराधना का स्थान यरूशलेम में है।”

२१ यीशु ने उससे कहा, “हे स्त्री, मुझ पर विश्वास कर, वह समय आ रहा है जब तुम न तो इस पहाड़ पर और न यरूशलेम में ही पिता की आराधना करोगे।

२२ तुम उसकी आराधना करते हो जिसे तुम नहीं जानते; हम उसकी आराधना करते हैं जिसे हम जानते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।

२३ परन्तु वह समय आ गया है, और अब है, जब सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है जो उसकी आराधना करें।

२४ परमेश्वर आत्मा है, और जिन्हें उसकी आराधना करनी चाहिए, उन्हें आत्मा और सच्चाई से आराधना करनी चाहिए।”

२५ स्त्री ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह (जिसे मसीह कहते हैं) आने वाला है; जब वह आएगा, तो वह हमें सब कुछ बताएगा।”

२६ यीशु ने उससे कहा, “मैं जो तुझसे बात कर रहा हूँ, वही हूँ।”